*Journal of Advances and Scholarly Researches in Allied Education*

*Vol. V, Issue IX, January-2013, ISSN 2230-7540*

**REVIEW ARTICLE**

# संत गुरु रविदास की वाणी में विचलन का अध्ययन

www.ignited.in

*Journal of Advances and Scholarly Researches in Allied Education*
*Vol. V, Issue IX, January-2013, ISSN 2230-7540*

# संत गुरु रविदास की वाणी में विचलन का अध्ययन

# Sant Guru Ravidas Vaani Me Vichalan Ka Adhayyan

**Dr. Deep Chand**

Scholar, Hindi Department, Kurukshetra University, Kurukshetra – 136119

----------X----------

"सामान्य भाषा के नियम, बन्धन, चलन अथवा पथ को छोड़कर नए का अनुसरण करना, नए पथ पर चलना ही विचलन (क्पअंजपवद), विपथन आदि हैं। पश्चिम में 'पायोटिक लाइसेंस' (कवि द्वारा ली गई छूट) अथवा संस्कृत का प्रसिद्ध कथन 'निरंकुशा कवयः' (कवि निरंकुश होते हैं) इसी विचलन की ओर संकेत करते हैं। भारतीय काव्यशास्त्र के वक्रोक्ति–सम्प्रदाय की 'वक्रोक्ति' भी यही हैं। पश्चिमी सौन्दर्यशास्त्र तथा शैलीविज्ञान में बहुप्रयुक्त 'फोरग्राउंडिग' शब्द भी इसी ओर संकेत करता है। अभिव्यक्ति की सामान्य व्यवस्था 'बैकग्राउंडिंग' (पुरा व्यवस्था) है तथा विचलन द्वारा प्राप्त नई व्यवस्था 'फोरग्राउंडिंग' (नव्य व्यवस्था) है।"1

भारतीय काव्यशास्त्र में आनन्दवर्धन द्वारा प्रस्तुत 'ध्वनि' और उसके पश्चात् कुन्तक द्वारा प्रस्तुत 'वक्रोक्ति' के लक्षण भी, अन्ततः प्रकारान्तर से सही, इसी आशय को प्रकट करते हैं कि सामान्य भाषा से विपथन में ही काव्यत्व निहित है। निम्नोक्त स्थल लीजिए–

"महाकवियों की वाणी में प्रसिद्ध अर्थ (लोक–प्रचलित अर्थ) से अतिरिक्त प्रतीयमान अर्थ को 'ध्वनि' कहते हैं जब प्रसिद्ध अर्थ अपनी सत्ता खो बैठता है। प्रसिद्धार्थ (वाच्यार्थ) और ध्वन्यार्थ (व्यंग्यार्थ) में यह भिन्नता वैसी होती हैं जैसा कि दीपशिखा और उससे निःसृत प्रकाश में होता है अथवा जैसा कि रमणी के सुन्दर मुख और उससे निःसृत लज्जा की आभा में होता है।"2

कवि–कर्म–कौशल से उत्पन्न वैचित्र्यपूर्ण कथन को वक्रोक्ति कहते हैं तथा वक्रोक्ति प्रसिद्ध अर्थ से अतिरिक्त अर्थ का निर्देश करती हैं। राजानक कुन्तक वक्रोक्ति अर्थ का निर्देश करती हैं। राजानक कुन्तक वक्रोक्ति सिद्धान्त के प्रतिष्ठाता हैं। व्यस्पित रूप में सर्वप्रथम भामह ने अपने 'काव्यालंकार' में वक्रोक्ति का परिचय दिया। उन्होंने वक्रोक्ति को अतिशयोक्ति का ही दूसरा नाम बताते हुए उसे काव्य का मूल तत्त्व माना था।

"सेषा सर्वत्र वक्रोक्तिरनयार्थो विभाव्यते।

यत्नोऽस्यां कविना कार्यः कोऽलंकारोऽनयाविना।"3

भामह ने वक्रोक्ति को अलंकार मानते हुए सभी अलंकारों के मूल में वक्रोक्ति की अनिवार्यता सिद्ध की।

"कुंतक को वक्रोक्तिवादी कहा जाता है। वक्रोक्ति को उन्होंने काव्य के प्राणभूत तत्त्व के रूप में स्वीकार किया। पर वक्रोक्ति की मूल अवधारणा उन्होंने आचार्य भामह से ही ली थी।"4

शैली का वैज्ञानिक अध्ययन ही शैलीविज्ञान हैं। आजकल साहित्यिक अभिव्यक्ति की पद्धति के रूप में शैली विज्ञान का प्रयोग हिन्दी आदि भाषाओं में हो रहा है। डॉ. सत्यदेव चौधरी के अनुसार–

"शैली शब्द से हमारा तात्पर्य है–कवि का रचना प्रकार, जो कि उसके द्वारा प्रयुक्त पदों एवं वाक्यों के माध्यम से अथवा कहिए भाषा के माध्यम से प्रकट होता है। 'शैलीविज्ञान' शब्द से हमारा अभिप्राय–वह विज्ञान या शास्त्र, जिसमें किसी काव्य की परख उसी भाषा के विभिन्न अवयवों को लक्ष्य में रखकर की जाती हैं।"5

भक्ति आन्दोलन के द्वीप स्तम्भ भक्त कबीर साहेब, गुरुनानक जैसे सन्त–महात्माओं को जन्म देने वाली इस भारत भूमि ने एक बार फिर संसार के कल्याण हित माध पूर्णिमा को सम्वत् 1433 को माता कर्माबाई की कोख से पिता राहु के घर कर्मयोगी–संत शिरोमणि श्री गुरु रविदास जी को जन्म देकर मानव जाति का उपकार किया। संत शिरोमणि श्री गुरु रविदास जी का नाम सम्पूर्ण भारतवर्ष में बड़े आदर के साथ लिया जाता है। उनकी गणना भक्ति युग अथवा मध्यकाल के गणमान्य स्वामी रामानन्द जी के बारह शिष्यों में सम्मानपूर्वक से की जाती है। "संत कबीर ने कहा है कि श्संतन में रविदास संत हैं।"6 संत रविदास का व्यक्तित्व एवं कृतित्व बड़ा उज्ज्वल हैं।

इस प्रकार शैलीविज्ञान के प्रमुख तत्त्वों में चयन, विचलन, विरलन, प्रोक्ति, अप्रस्तुत विधान का अध्ययन किया जाता है। अतरू संत गुरु रविदास वाणी में विचलन का अध्ययन यहाँ द्रष्टव्य है–

विचलन के विविध आयाम–विचलन भाषा के विविध आयामों जैसे–ध्वनि, शब्द, रूप (कारक, बहुवचन) वाक्य, अर्थ आदि सभी स्तरों पर प्रतिफलित हो सकती है।

ध्वनि विचलन – मानक भाषा में प्रयुक्त 'ध्वनियाँ' जब अपने सामान्य व्यवहृत रूप से भिन्न रूप में प्रयोग की जाती हैं तो वहाँ ध्वनि स्तरीय विचलन होता है। संत रविदास वाणी में ध्वनि विचलन के अनेकों उदाहरण प्राप्त होते हैं– श्शय के स्थान पर 'स' का प्रयोग–

सिव7 संका8 सहर9 संकर10

'ष' के स्थान पर 'स' का प्रयोग–

दोस11 दुस्करम12 सुसमन13

'ब' के स्थान पर 'भ' का प्रयोग –

सभ14

www.ignited.in

शब्द विचलन–जब कोई शब्द भाषा के परिष्कृत रूप में प्रयुक्त न होकर विकृत रूप में प्रयुक्त होता है तो शब्द विचलन होता है। संत रविदास वाणी में शब्द विचलन के उदाहरण द्रष्टव्य हैं–

बिनास15 नृवांन16 विस्थार17 सेवग18 जमपुर19 सनमुख20 मुकति21, अनभवै22 सरन23 सरूप24

रूपीय विचलन – जब कोई कवि या लेखक किसी रूपिम के मानक रूप के स्थान पर किसी अन्य रूपिम का प्रयोग करता है तो रूप स्तर पर विचलन होता है। जैसे प्रत्यय के रूप में विचलन :

"गगन मंडल पिउ रूप सो, कोट भान उजियार।"25 प्रस्तुत उद्धरण में 'पिया' शब्द की अपेक्षा 'पिअ' शब्द का प्रयोग हुआ है अतः यहाँ पर प्रत्यय विचलन हमें प्राप्त होता है।

## लिंग विचलन :

"दरसन तोरा जीवनि मोरा।"26

उपर्युक्त उद्धरण में 'जीवनि' (इनि प्रत्यय लगाकर) के स्थान पर 'जीवन' होना चाहिए था, अतः यहाँ पर 'इनि' प्रत्यय लगाकर 'पुल्लिंग' के स्थान पर 'स्त्रीलिंग' का प्रयोग मिलता है।

## वचन विचलन :

"देता रहे हजार बरस मुल्ला चाहे अजान।"27

उपर्युक्त उद्धरण में वचन विचलन दृष्टिगोचर होता है। यहाँ पर 'हजार' शब्द एकवचन में प्रयुक्त हुआ है, परन्तु मानक भाषा नियमों के अनुसार यहाँ पर बहुवचन 'हजारों' होना चाहिए था।

## व्याकरणिक कोटियों के नियमों का विचलन :

प्रत्येक भाषा के अपने व्याकरणिक नियम होते हैं, इन नियमों के अनुसार ही संज्ञा, सर्वनाम, क्रिया, विशेषण आदि शब्दों का प्रयोग होता है, भाषा की व्याकरण ही यह बताती है कि कौन से शब्दों का प्रयोग किस शब्द के साथ उचित हैं। परन्तु हमें कई बार व्याकरणिक कोटियों के विचलन भी प्राप्त होते हैं। जैसे–

## संज्ञा विचलन :

"जल की भीति, पवन का थंभा, रक्त बूंद का गारा।

हाड मांस नाड़ी कौ पिंजरू, पंखी बसै बिचारा।।"28

उपरोक्त पद में हमें संज्ञा विचलन प्राप्त होता है। यहाँ पर जल की दीवार, पवन का थम्भा, रक्त बूंद का गारा, से बना मनुष्य का पिंजरा रूपी शरीर है, जिसमें आत्मा रूपी पक्षी निवास करता है। अतः यहाँ पर संज्ञा विचलन है। यह सर्वविदित है कि मनुष्य का शरीर पंचतत्त्वों से मिलकर बना है।

## विशेषण विचलन :

"ऊंच नीच तुम ते तरे, आलजु संसारू।"29

उपरोक्त उद्धरण में 'संसार' के साथ 'आलजु' (निर्लज्ज) विशेषण जोड़ा गया है अर्थात् इस निर्लज्ज संसार में हे ईश्वर! आप के नाम से छोटे–बड़े भवसागर को पार कर जाते हैं। अतरू यहाँ पर 'निर्लज्ज' विशेषण का प्रयोग 'मानव' के साथ प्रयोग न होकर 'संसार' के साथ प्रयोग हुआ है। अतः यहाँ पर विशेषण विचलन प्राप्त होता है।

## अर्थ विचलन :

संज्ञा, क्रिया, विशेषण के सभी विचलित प्रयोगों में किसी न किसी रूप में अर्थ विचलन भी अवश्य होता है, इसके अतिरिक्त उपमा, रूपक, मानवीकरण आदि अलंकारों तथा प्रतीक, मुहावरे, लोकोक्ति में भी हमें अर्थ विचलन प्राप्त हाता है।

अलंकार रूप में विचलन –संत रविदास वाणी में हमें अलंकार विचलन कई स्थानों पर प्राप्त होता है। जैसे–

उपमा – "बट के बीज जैसा आकार, पसरयौ तीनि लोक पसार।"30

उपरोक्त उद्धरण में इस संसार की व्यापकता की तुलना बट के बीज से की है अतः यहाँ पर अलंकार रूप में विचलन दृष्टिगोचर होता है।

## प्रतीक रूप में विचलन :

"प्रभु जी तुम चन्दन हम पानी, जाकी अंग–अंग बास समानी।

प्रभु जी तुम दीपक हम बाती, जाकी जोति बरै दिन–राति।।"31

प्रस्तुत पद में रविदास जी ने सेवक सेव्य भाव द्वारा चन्दन, पानी, चंद–चकोर, दीपक–बाती के गूढ़ संबंधों के प्रतीकों द्वारा दास्य भाव का चित्रण सुन्दर रूप में किया है। इस प्रकार यहाँ प्रतीक के प्रयोग द्वारा अर्थ विचलन है।

मुहावरों के रूप में अर्थ विचलन –

अंक माल लै–गले लगाना।32

अंक राखि – गोद में बैठाना।33

कजलि कूं कोठरी –कलंक, बदनामी का कारण।34

अतः यहाँ पर मुहावरों के रूप में अर्थ विचलन है।

## निष्कर्ष :

अतः निष्कर्ष रूप से कहा जा सकता है कि संत रविदास वाणी में जहाँ कही भी विचलन मिलता है, वह सौद्देश्य हैं। ध्वन्यात्मक विचलन से उनकी भाषा हमें अधिक प्रभावपूर्ण रूप में प्राप्त होती है। उनकी वाणी में लिंग और विचलन पर अवधी का प्रभाव नजर आता है। "वास्तव में संत रविदास का काव्य है एक चर्मकार के प्रति समाज की हीन और उपेक्षित दृष्टि। घृणा और सामाजिक प्रताड़नाओं के बीच रविदास ने टकराव और भेदभाव को मिटाकर प्रेम और एकता का संदेश देकर आज भी अपनी प्रासंगिकता सिद्ध कर दी है।"35

## पाद टिप्पणी

1. भोलानाथ तिवारी, शैलीविज्ञान, पृ. 49

2. सत्यदेव चौधरी, भारतीय शैलीविज्ञान, पृ. 276

3. सुधा गुप्ता, वक्रोक्ति सिद्धान्त और हिन्दी कविता, पृ. 4

4. राधा वल्लभ त्रिपाठी, संस्कृत काव्यशास्त्र और काव्य परम्परा, पृ. 159

5. सत्यदेव चौधरी, भारतीय शैलीविज्ञान, पृ. 58

6. काशीनाथ उपाध्याय, गुरु रविदास, पृ. 4

7. बी.पी. शर्मा, संत गुरु रविदास वाणी, पद–28

8. वही, पद–30

9. वही, पद–137

10. वही, पद–85

11. वही, पद–88

12. वही, पद–90

13. वही, पद–176

14. पृथ्वी सिंह आजाद, रविदास दर्शन, पृ. 65

15. बी.पी. शर्मा, संत गुरु रविदास वाणी, पद–2

16. वही, पद–4

17. पृथ्वी सिंह आजाद, रविदास दर्शन, पद–48

18. वही, पद–150

19. वही, पद–179

20. बी.पी. शर्मा, संत गुरु रविदास वाणी, पद–7

21. वही, पद–3

22. वही, पद–8

23. वही, पद–9

24. वही, पद–11

25. पृथ्वी सिंह आजाद, रविदास दर्शन, पृ. 12

26. बी.पी. शर्मा, संत गुरु रविदास वाणी, पद–109

27. पृथ्वी सिंह आजाद, रविदास दर्शन, पृ. 74

28. वही, पद–35

29. बी.पी. शर्मा, संत गुरु रविदास वाणी, पद–121

30. वही, पद–67

31. वही, पद–31

32. बी.पी. शर्मा, संत गुरु रविदास वाणी, पद– 90

33. वही, पद–163

34. वही, पद–174

35. स. मीरा गौतम, गुरु रविदास : वाणी एवं महत्त्व, पृ. 412